कार्यवाही
"उपकार प्रतिनिधिमंडल द्वारा आईजीएफआरआई का भ्रमण"

भा.कृ.अनु.प. - भारतीय चरागाह एवं चारा अनुसंधान संस्थान, झाँसी

भ्रमण की तिथि: 16 अक्टूबर, 2025

उत्तर प्रदेश कृषि अनुसंधान परिषद (उपकार), लखनऊ, उत्तर प्रदेश

प्रसंग एवं प्रतिनिधिमंडल:

उत्तर प्रदेश कृषि अनुसंधान परिषद (उपकार), लखनऊ का एक प्रतिनिधिमंडल 15 अक्टूबर, 2025 को भाकृअनु– भारतीय चरागाह एवं चारा अनुसंधान संस्थान (आईजीएफआरआई), झांसी का भ्रमण किया। इस दौरान संस्थान के साथ सहयोगात्मक अनुसंधान एवं प्रसार गतिविधियों को सुदृढ़ करने हेतु एक विशेष परामर्श सत्र आयोजित किया गया।

प्रतिनिधिमंडल के सदस्य (उपकार):

- डॉ. संजय सिंह, महानिदेशक
- डॉ. राजर्षि गौर, उप महानिदेशक
- डॉ. रिन्नी सिंह, वैज्ञानिक अधिकारी

मुख्य चर्चा के विषय:

- चारे की सुरक्षा एवं बारहमासी फसलों के विकास पर संयुक्त अनुसंधान परियोजनाओं की पहचान।
- उत्तर प्रदेश के शुष्क एवं अर्ध-शुष्क क्षेत्रों के लिए सूखा-रोधी घास की किस्मों के विकास में आईजीएफआरआई की विशेषज्ञता का उपयोग।
- संस्थान में पीएच.डी. अध्ययन हेतु विद्यार्थियों के अकादमिक आदान-प्रदान पर चर्चा।
- दोनों संस्थाओं के बीच उद्यमिता संवर्द्धन (इनक्यूबेशन) गतिविधियों को सुदृढ़ करने हेतु एमओयू (समझौता ज्ञापन) पर हस्ताक्षर करने का प्रस्ताव।
- स्पाइनलेस कैक्टस (काँटारहित नागफनी) एवं उसके उपयोग, गुणवत्तापूर्ण बीज उपलब्धता तथा चारा उत्पादन हेतु किसानों के सहयोग से संबंधित चर्चा।
- **नीलगाय से दलहनी फसलों की क्षति के विरुद्ध रणनीतिक पहल:** इस महत्वपूर्ण चर्चा का केंद्र बिंदु उच्च मूल्य की दलहनी फसलों को नीलगाय (नील बैल) से होने वाले नुकसान से जैविक रूप से बचाने के व्यावहारिक एवं किफायती उपायों पर था।

- **प्रस्तावित सहयोगात्मक समाधान:** सर्वसम्मति से यह निर्णय लिया गया कि एक पायलट परियोजना प्रारंभ की जाएगी, जिसके अंतर्गत संस्थान में विकसित बाजरा-नेपीयर घास की एक मज़बूत एवं अप्रिय (नीलगाय के लिए अरुचिकर) बारहमासी किस्म का उपयोग किया जाएगा। इस घास को दलहनी फसलों के खेतों के चारों ओर घने जैविक बाड़ (बायोलॉजिकल फेंस) के रूप में लगाया जाएगा। यह विधि पारंपरिक बाड़बंदी की तुलना में अधिक टिकाऊ, किफायती एवं व्यावहारिक समाधान प्रदान करेगी, जिससे संवेदनशील फसलों की प्रभावी सुरक्षा सुनिश्चित हो सकेगी।

निष्कर्ष एवं अनुशंसाएँ:

- आईसीएआर–आईजीएफआरआई में आयोजित यह आधिकारिक परामर्श एवं भ्रमण अत्यंत फलदायी सिद्ध हुआ। इस कार्यवाही ने भविष्य में सहयोगात्मक अनुसंधान तथा क्षेत्रीय स्तर पर व्यावहारिक समाधानों के कार्यान्वयन हेतु एक सशक्त आधार स्थापित किया है, विशेषकर जलवायु सहनशीलता, पोषण संवर्धन एवं फसल संरक्षण के संदर्भ में।
- इसके साथ ही यह भी चर्चा हुई कि दोनों संस्थानों में उपलब्ध विशेषज्ञता का उपयोग करते हुए स्टार्टअप समुदाय एवं अन्य हितधारकों को सहयोग प्रदान करने हेतु संयुक्त प्रयासों को अपनाने की दिशा में ठोस कदम उठाए जाएंगे।

भ्रमण की झलकियाँ:

उपकार–आईजीएफआरआई

...

प्रतिवेदन समापन

(Sanjay Singh)
Director General
U.P. Council of Agricultural Research
Lucknow